| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

भारत में बढ़ता शहरीकरण बनाम मानव जीवन

आशा नागर

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान, राजकीय महाविद्यालय, देवली, टोंक, राजस्थान, भारत

सार

भारत में शहरों में तनाव भी तुलनात्मक रूप से अधिक है क्योंकि यहाँ पर संपत्ति संबंधी और आर्थिक असमानता अधिक पाई जाती है, या कहें कि प्रत्येक प्रकार की असमानता का केंद्र शहर ही हैं।भारत की शीर्ष 10% आबादी के पास देश की कुल संपत्ति का 77.4% हिस्सा है। इनमें से भी सिर्फ एक प्रतिशत आबादी के पास देश की कुल संपत्ति का 51.53% हिस्सा है।भारत की 60% आबादी के पास देश की सिर्फ 4.8% संपत्ति है।देश के शीर्ष नौ धनवानों की संपत्ति 50% गरीब आबादी की संपत्ति के बराबर है। तेजी से बढ़ता हुआ शहरीकरण और शहरों की जनसंख्या में हो रही बढोतरी को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के समाधान की दिशा में प्रमुख चुनौतियों के रूप में देखा जाता रहा है। अनुमान है कि विकासशील देशों में शहरी आबादी में तीन गुना वृद्धि हो चुकी होगी और यह कुल जनसंख्या के 61 प्रतिशत के बराबर हो जाएगी। इस बढ़ती हुई शहरी आबादी को देखते हुए पानी, पर्यावरण, हिंसा और चोट , गैर संचारी रोगों जैसी स्वास्थ्य संबंधी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, तम्बाकू के उपयोग, अस्वास्थ्यकर आहार, शारीरिक अकर्मण्यता और महामारियों के फैलने से जुड़ी आशंकाएँ और खतरे भी कोई कम चुनौतीपूर्ण नहीं हैं। पर्यावरण सुरक्षा के मद्देनज़र शहर एक बड़ी चुनौती बन रहे हैं क्योंकि शहर के विकास के लिये हरित क्षेत्र की बलि चढ़ाई जा रही है। जलवायु संबंधी परिवर्तनों ने कई शहरों के अस्तित्व को चुनौती दी है, विशेषत: समुद्र किनारे बसे शहर अब मानव निर्मित आपदाओं से अछूते नहीं रह गए हैं। इसके अलावा, तीव्र प्रौद्योगिकीय विकास शहरों में अनेक परंपरागत व्यवसाय करने वाले समूहों के लिये खतरा बन गया है क्योंकि इससे भी पर्यावरण को नुकसान होता है। देश के सभी बड़े शहरों और महानगरों में बड़ी संख्या में स्लम बस्तियाँ बन गई हैं। इनमें रहने वाले लोग शहरी जनसंख्या से संबंधित उच्च एवं मध्य वर्ग की अनेक आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, परंतु वे न केवल गरीबी के शिकार हैं अपितु बुनियादी सुविधाओं से भी वंचित हैं। प्रत्येक शहर में बेतरतीब यातायात एक गंभीर समस्या बन गया है क्योंकि सार्वजनिक परिवहन सेवाओं को लगभग समाप्त कर दिया गया है। शहर में रहने वाले समृद्ध लोग अपनी शक्ति और संपन्नता के प्रदर्शन के लिये यातायात नियमों का उल्लंघन करते हैं और इससे बड़ी संख्या में सड़क हादसे होते हैं। हमारे देश का लगभग हर शहर सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं से वंचित है। स्वास्थ्य सेवाओं के निजीकरण एवं व्यवसायीकरण ने शहरों में असमानताओं को जन्म दिया है।शहरों की सड़कों पर गड्ढे, सीवर प्रणाली का अभाव एवं जल-जमाव से होने वाली परेशानियाँ, बिजली, पानी एवं संचार सुविधाओं का अस्त-व्यस्त व असमान रूप शहरी जीवन को इतना अधिक समस्यामूलक बना देता है कि कई शहरों में जाने की कल्पना मात्र से सिहरन होने लगती है।अपराध की दृष्टि से भी शहर तुलनात्मक रूप से अधिक असुरक्षित हैं...कंक्रीट के जंगल में रहने वाले लोग अपने पड़ोसी को भी नहीं जानते।भावनाशून्यता, संवादहीनता और व्यक्तिवादिता की प्रवृत्ति शहरी जनसंख्या के जीवन का हिस्सा बन गई है।नवउदारवाद और वैश्वीकरण के बाद अब गाँव केवल खाद्य, श्रम एवं कच्चे उत्पादों के आपूर्तिककर्त्ता बनकर रह गए हैं। शहर आधुनिकीकरण व उपभोक्तावादी सभ्यता को प्रदर्शित करते हैं और अधिकांश गाँव अपने अस्तित्व के लिये इन शहरों से जुड़े हुए हैं। शहरीकरण, औद्योगीकरण, सामाजिक गतिशीलता एवं पलायन की प्रक्रिया में वृद्धि हुई है और नई पीढ़ी गाँवों से शहरों की ओर पलायन करने लगी है।

परिचय

भारत में शहरी क्षेत्रों का सतत, संतुलित एवं समेकित विकास सरकार की मुख्य प्राथमिकता एवं शहरी विकास का एक केंद्रीय विषय है। जिस तरीके से देश में 'शहरीकरण' की प्रक्रिया का प्रबंधन होगा, उसी से यह निर्धारित होगा कि किस सीमा तक शहरी अवस्थांतर का लाभ उठाया जा सकता हैं। [90,91,93]राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के संचालन में शहरों के उभरने से भारत अपनी विकास यात्रा के एक अहम पड़ाव पर है, जहाँ शहरों/कस्बों के विकसित होने, संपन्न होने तथा निवेश एवं उत्पादकता का

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

व्यावसायिक केंद्र बनने के लिये पर्याप्त अवसरों का सृजन अवश्य किया जाना चाहिये। जलवायु परिवर्तन की गंभीर स्थिति को कम करने के लिये स्मार्ट सिटी मिशन जैसे अभियानों को पर्यावरण,[87,88,89] सतत एवं अवसंरचना विकास के लिये अनेक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रयासों, उत्सर्जन में कमी एवं आपदा के प्रति शहरों का लचीलापन बढ़ाने के अनुरूप तैयार किया गया है। [94,95,96]प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अंतर्गत अभिनव एवं आधुनिक निर्माण प्रौद्योगिकी के उपयोग की सुविधा प्रदान करने के लिये प्रौद्योगिकी सब-मिशन भी शुरू किया गया है। इसके अलावा शहरों में रहने की उपयुक्तता के मापन की आवास एवं शहरी मामलों के मंत्रालय की परियोजना में सभी 79 संकेतक विभिन्न सतत विकास लक्ष्यों से जुड़े हैं। इनमें सार्वजनिक परिवहन से लेकर पानी के दोबारा इस्तेमाल, प्रदूषण आदि को शामिल किया गया है।[1,2,3]

शहरीकरण (या शहरीकरण) ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों में आबादी के बदलाव को संदर्भित करता है , ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के अनुपात में कमी,[97,98,99] और जिस तरह से समाज इस परिवर्तन के अनुकूल होते हैं। [1] यह मुख्य रूप से वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कस्बे और शहर बनते हैं और बड़े होते हैं क्योंकि अधिक लोग केंद्रीय क्षेत्रों में रहना और काम करना शुरू करते हैं। [2]

शहरीकरण अक्सर मानवता के सामने मौजूद असंख्य आधुनिक समस्याओं के लिए जिम्मेदार होता है। यद्यपि दो अवधारणाओं को कभी-कभी एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जाता है, शहरीकरण को शहरी विकास से अलग किया जाना चाहिए ।[84,85,86] शहरीकरण शहरी के रूप में वर्गीकृत क्षेत्रों में रहने वाली कुल राष्ट्रीय आबादी के अनुपात को संदर्भित करता है, जबकि शहरी विकास सख्ती से उन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की पूर्ण संख्या को संदर्भित करता है। [3] यह भविष्यवाणी की गई है कि 2050 तक विकासशील दुनिया का लगभग 64% और विकसित दुनिया का 86% हिस्सा शहरीकृत हो जाएगा। यह अधिकांश शहरी निवासियों के लिए भूमि की कृत्रिम कमी, पीने के पानी की कमी, खेल के मैदानों आदि की कृत्रिम कमी उत्पन्न करने की भविष्यवाणी की गई है। [4]अनुमानित शहरी जनसंख्या वृद्धि 3 बिलियन शहरी लोगों के बराबर है, जिनमें से अधिकांश अफ्रीका और एशिया में होंगे । [5] विशेष रूप से, संयुक्त राष्ट्र ने भी हाल ही में अनुमान लगाया है कि 2017 से 2030 तक लगभग सभी वैश्विक जनसंख्या वृद्धि शहरों द्वारा होगी, जिसमें अगले 10 वर्षों में लगभग 1.1 बिलियन नए शहरी होंगे। [6] लंबे समय में, शहरीकरण से जीवन की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की उम्मीद है। [7] [8]

शहरीकरण कई विषयों के लिए प्रासंगिक है, जिसमें शहरी नियोजन , भूगोल , समाजशास्त्र , वास्तुकला , अर्थशास्त्र , शिक्षा , सांख्यिकी और सार्वजनिक स्वास्थ्य शामिल हैं ।[81,82,83] इस घटना को वैश्वीकरण , आधुनिकीकरण , औद्योगीकरण और युक्तिकरण की समाजशास्त्रीय प्रक्रिया से निकटता से जोड़ा गया है । [9]शहरीकरण को एक निर्धारित समय पर एक विशिष्ट स्थिति के रूप में देखा जा सकता है[100,101,102] (जैसे शहरों या कस्बों में कुल जनसंख्या या क्षेत्र का अनुपात), [4,5,6] या समय के साथ उस स्थिति में वृद्धि के रूप में। इसलिए, शहरीकरण को या तो समग्र जनसंख्या के सापेक्ष शहरी विकास के स्तर के संदर्भ में, या उस दर के रूप में , जिस पर जनसंख्या का शहरी अनुपात बढ़ रहा है, परिमाणित किया जा सकता है। [78,79,80]शहरीकरण भारी सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियां पैदा करता है, जो "संसाधनों को बहुत कम या अधिक कुशलता से उपयोग करने की क्षमता, अधिक टिकाऊ भूमि उपयोग बनाने और प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र की जैव विविधता की रक्षा के लिए" के साथ स्थिरता का अवसर प्रदान करता है।[103] हालाँकि, वर्तमान शहरीकरण के रुझानों ने दिखाया है कि बड़े पैमाने पर शहरीकरण ने जीने के अस्थिर तरीकों को जन्म दिया है।[5] बढ़ते शहरीकरण के सामने शहरी लचीलापन और शहरी स्थिरता का विकास सतत विकास लक्ष्य 11 "सतत शहरों और समुदायों" में अंतर्राष्ट्रीय नीति के केंद्र में है।[7,8,9]

शहरीकरण केवल एक आधुनिक घटना नहीं है, बल्कि वैश्विक स्तर पर मानव सामाजिक जड़ों का तेजी से और ऐतिहासिक परिवर्तन है , जिससे मुख्य रूप से ग्रामीण संस्कृति को मुख्य रूप से शहरी संस्कृति द्वारा तेजी से बदला जा रहा है ।[75,76,77] बस्तियों के पैटर्न में पहला बड़ा परिवर्तन शिकारी-संग्रहकर्ताओं का जमावड़ा थाकई हजारों साल पहले गांवों में ग्रामीण संस्कृति की विशेषता सामान्य रक्तपंक्तियों, घनिष्ठ संबंधों और सांप्रदायिक व्यवहार से होती है,[10,11,12] जबकि शहरी संस्कृति की पहचान दूरस्थ रक्तपंक्तियों, अपरिचित संबंधों और प्रतिस्पर्धी व्यवहार से होती है। लोगों का यह अभूतपूर्व आंदोलन अगले कुछ दशकों के दौरान जारी रहने और तीव्र होने का अनुमान है, एक सदी पहले अकल्पनीय आकार वाले शहरों में कुकुरमुत्ते की तरह वृद्धि हुई। नतीजतन, विश्व शहरी जनसंख्या वृद्धि वक्र हाल ही में द्विघात-अतिशयोक्तिपूर्ण पैटर्न का पालन किया है। [10]

शहरीकरण या तो संगठित रूप से होता है या योजनाबद्ध तरीके से व्यक्तिगत, सामूहिक और राज्य की कार्रवाई के परिणामस्वरूप होता है। एक शहर में रहना सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से फायदेमंद हो सकता है क्योंकि यह श्रम बाजार

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

तक पहुंच, बेहतर शिक्षा, आवास और सुरक्षा की स्थिति के लिए अधिक अवसर प्रदान कर सकता है और आने-जाने और परिवहन के समय और खर्च को कम कर सकता है। सघनता, निकटता, विविधता और बाज़ार प्रतिस्पर्धा जैसी स्थितियाँ एक शहरी वातावरण के तत्व हैं जिन्हें लाभकारी माना जाता है। [72,73,74]हालाँकि, वहाँ भी हानिकारक सामाजिक घटनाएँ उत्पन्न होती हैं: अलगाव, तनाव, रहने की लागत में वृद्धि, और बड़े पैमाने पर हाशिए पर रहना जो शहरी जीवन शैली से जुड़े हैं. शहरों में, पैसा, सेवाएं, धन और अवसर केंद्रीकृत हैं। कई ग्रामीण निवासी अपना भाग्य तलाशने और अपनी सामाजिक स्थिति बदलने के लिए शहर आते हैं। व्यवसाय, जो नौकरी प्रदान करते हैं और पूंजी का आदान-प्रदान करते हैं, शहरी क्षेत्रों में अधिक केंद्रित हैं। चाहे स्रोत व्यापार हो या पर्यटन, यह बंदरगाहों या बैंकिंग प्रणालियों के माध्यम से भी होता है, जो आमतौर पर शहरों में स्थित होते हैं, विदेशी धन किसी देश में प्रवाहित होता है।[13,14,15]

बहुत से लोग आर्थिक अवसरों के लिए शहरों में जाते हैं, लेकिन यह चीन और भारत जैसे स्थानों में हाल ही में उच्च शहरीकरण दर की पूरी तरह से व्याख्या नहीं करता है। ग्रामीण उड़ान शहरीकरण के लिए एक योगदान कारक है।[69,70,71] ग्रामीण क्षेत्रों में, अक्सर छोटे परिवार के खेतों या गांवों में सामूहिक खेतों पर, निर्मित वस्तुओं तक पहुंचना ऐतिहासिक रूप से कठिन रहा है, हालांकि जीवन की सापेक्ष समग्र गुणवत्ता बहुत ही व्यक्तिपरक है, और निश्चित रूप से शहर से आगे निकल सकती है। कृषि जीवन हमेशा अप्रत्याशित पर्यावरणीय परिस्थितियों के प्रति अतिसंवेदनशील रहा है, और सूखे , बाढ़ या महामारी के समय में जीवित रहना बेहद समस्याग्रस्त हो सकता है।[16,17,18]

भारत (36%) की तुलना में कहीं अधिक व्यापक और तेजी से शहरीकरण (54%) हुआ है, जहां किसान ऐसे प्रयासों का विरोध करने के लिए उग्रवादी समूह (जैसे नक्सली) बनाते हैं । अनिवार्य और अनियोजित प्रवासन के परिणामस्वरूप अक्सर मलिन बस्तियों का तेजी से विकास होता है। यह भी हिंसक संघर्ष के क्षेत्रों के समान है, जहां हिंसा के कारण लोगों को उनकी भूमि से खदेड़ दिया जाता है।[19,20,21]

विचार-विमर्श

भारत में शहर ग्रामीण क्षेत्रों में नहीं मिलने वाली विशेषज्ञ सेवाओं सहित कई प्रकार की सेवाएँ प्रदान करते हैं। इन सेवाओं के लिए श्रमिकों की आवश्यकता होती है, जिसके परिणामस्वरूप अधिक संख्या में और विविध रोजगार के अवसर मिलते हैं।[66,67,68] बुजुर्ग लोगों को उन शहरों में जाने के लिए मजबूर किया जा सकता है जहां डॉक्टर और अस्पताल हैं जो उनकी स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को पूरा कर सकते हैं। विविध और उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक अवसर शहरी प्रवास के साथ-साथ सामाजिक समुदायों में शामिल होने, विकसित होने और तलाश करने का एक अन्य कारक हैं।जैसे-जैसे शहर विकसित होते हैं, प्रभावों में नाटकीय वृद्धि और लागत में परिवर्तन शामिल हो सकते हैं, अक्सर स्थानीय श्रमिक वर्ग को बाजार से बाहर कर दिया जाता है, जिसमें स्थानीय नगर पालिकाओं के कर्मचारियों के रूप में ऐसे अधिकारी शामिल होते हैं। उदाहरण के लिए, एरिक हॉब्सबॉम की पुस्तक द एज ऑफ़ रेवोल्यूशन: 1789–1848(1962 और 2005 में प्रकाशित) अध्याय 11 में कहा गया है,[22,23,24] "हमारी अवधि में शहरी विकास वर्ग अलगाव की एक विशाल प्रक्रिया थी, जिसने नए श्रमिक गरीबों को सरकार, व्यवसाय और नए विशेषीकृत आवासीय क्षेत्रों के केंद्र के बाहर दुख के महान दलदल में धकेल दिया। [63,64,65]पूंजीपति वर्ग। बड़े शहरों के 'अच्छे' पश्चिमी छोर और 'खराब' पूर्वी छोर में लगभग सार्वभौमिक यूरोपीय विभाजन इस अवधि में विकसित हुआ। यह प्रचलित दक्षिण-पश्चिम हवा के कारण होने की संभावना है जो कोयले के धुएं और अन्य वायुजनित प्रदूषकों को नीचे की ओर ले जाती है, जिससे शहरों के पश्चिमी किनारों को पूर्वी लोगों के लिए बेहतर बना दिया जाता है। समुदायों का तेजी से विकास विकसित दुनिया में नई चुनौतियां पैदा करता है और ऐसी ही एक चुनौती भोजन की बर्बादी में वृद्धि है [52] जिसे शहरी खाद्य अपशिष्ट के रूप में भी जाना जाता है। [53] [54] [55] खाद्य अपशिष्ट खाद्य उत्पादों का निपटान है जो अप्रयुक्त उत्पादों, समाप्ति या खराब होने के कारण अब उपयोग नहीं किया जा सकता है। भोजन की बर्बादी में वृद्धि पर्यावरण संबंधी चिंताओं को बढ़ा सकती है जैसे कि मीथेन गैसों के उत्पादन में वृद्धि और रोग वाहकों का आकर्षण । [54] [56] लैंडफिल मीथेन के निकलने का तीसरा प्रमुख कारण है, [57]हमारे ओजोन और व्यक्तियों के स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव पर चिंता पैदा कर रहा है। खाद्य अपशिष्ट के संचय से किण्वन में वृद्धि होती है, जिससे कृन्तकों और बग के प्रवास का खतरा बढ़ जाता है। रोग वाहकों के प्रवासन में वृद्धि से मनुष्यों में रोग के फैलने की संभावना बढ़ जाती है। [58]

अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली वैश्विक से स्थानीय सभी पैमानों पर भिन्न होती है और जीवनशैली से भी प्रभावित हो सकती है। औद्योगिक क्रांति के बाद तक अपशिष्ट प्रबंधन प्राथमिक चिंता नहीं थी। जैसे-जैसे शहरी क्षेत्रों में मानव आबादी का विकास

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

जारी रहा,[60,61,62] ठोस कचरे का उचित प्रबंधन एक स्पष्ट चिंता का विषय बन गया। इन चिंताओं को दूर करने के लिए, स्थानीय सरकारों ने सबसे कम आर्थिक प्रभावों के समाधान की मांग की, जिसका मतलब प्रक्रिया के अंतिम चरण में तकनीकी समाधानों को लागू करना था। [59] वर्तमान अपशिष्ट प्रबंधन इन आर्थिक रूप से प्रेरित समाधानों को दर्शाता है,[25,26,27] जैसे भस्मीकरण या अनियमित लैंडफिल। फिर भी, जीवन चक्र खपत के अन्य क्षेत्रों को संबोधित करने के लिए बढ़ती वृद्धि प्रारंभिक चरण में कमी से लेकर गर्मी की वसूली और सामग्री के पुनर्चक्रण तक हुई है। [59]उदाहरण के लिए, बड़े पैमाने पर खपत और तेज फैशन की चिंताएं शहरी उपभोक्ताओं की प्राथमिकताओं में सबसे आगे आ गई हैं। पर्यावरण संबंधी चिंताओं (जैसे जलवायु परिवर्तन प्रभाव) के अलावा, अपशिष्ट प्रबंधन के लिए अन्य शहरी चिंताएं सार्वजनिक स्वास्थ्य और भूमि पहुंच हैं।[57,58,59] आवासों के विभाजन के कारण शहरीकरण जैव विविधता पर एक बड़ा प्रभाव डाल सकता है और इस प्रकार प्रजातियों का अलगाव हो सकता है, इस प्रक्रिया को आवास विखंडन के रूप में जाना जाता है । [60] आवास विखंडन आवास को नष्ट नहीं करता है, जैसा कि निवास स्थान के नुकसान में देखा गया है , बल्कि इसे सड़कों और रेलवे जैसी चीजों से अलग कर देता है [61] यह परिवर्तन किसी प्रजाति को पर्यावरण से अलग करके जीवन को बनाए रखने की क्षमता को प्रभावित कर सकता है।[28,29,30] भोजन तक आसानी से पहुंचने में सक्षम है, और उन क्षेत्रों को ढूंढता है जिन्हें वे शिकार से छिपा सकते हैं [62] उचित योजना और प्रबंधन के साथ, गलियारों को जोड़कर विखंडन से बचा जा सकता है जो क्षेत्रों के संबंध में सहायता करते हैं और शहरीकृत क्षेत्रों के आसपास आसान आवाजाही की अनुमति देते हैं। [63] [64]

विभिन्न कारकों के आधार पर, जैसे शहरीकरण का स्तर, "प्रजातियों की समृद्धि" में वृद्धि या कमी दोनों देखी जा सकती हैं। [65] [66] इसका मतलब यह है कि शहरीकरण एक प्रजाति के लिए हानिकारक हो सकता है लेकिन दूसरों के विकास को सुविधाजनक बनाने में भी मदद करता है। आवास और भवन के विकास के उदाहरणों में, कई बार निर्माण को आसान और कम खर्चीला बनाने के लिए वनस्पति को तुरंत पूरी तरह से हटा दिया जाता है[54,55,56], जिससे उस क्षेत्र में किसी भी मूल प्रजाति का नामोनिशान मिट जाता है। पर्यावास विखंडन सीमित फैलाव क्षमता वाली प्रजातियों को फ़िल्टर कर सकता है। उदाहरण के लिए, शहरी परिदृश्य में जलीय कीड़ों की प्रजाति समृद्धि कम पाई जाती है। [67] आवास के आसपास जितना अधिक शहरीकरण होता है, [31,32,33]उतनी ही कम प्रजातियां आवास तक पहुंच पाती हैं। [68]दूसरी बार, जैसे पक्षियों के साथ, शहरीकरण समृद्धि में वृद्धि की अनुमति दे सकता है जब जीव नए पर्यावरण के अनुकूल होने में सक्षम होते हैं। यह उन प्रजातियों में देखा जा सकता है जो विकसित क्षेत्रों की सफाई करते समय भोजन प्राप्त कर सकती हैं या वनस्पति जो शहरीकरण के बाद जोड़ा गया है अर्थात शहरी क्षेत्रों में पेड़ लगाए गए हैं [69]

परिणाम

भारत में शहरीकरण भी अस्थमा के बढ़ते जोखिम से जुड़ा हुआ है। दुनिया भर में, जैसे-जैसे समुदाय ग्रामीण से शहरी समाज में संक्रमण कर रहे हैं,[51,52,53] अस्थमा से प्रभावित लोगों की संख्या बढ़ रही है। ब्राजील में शहरीकृत नगर पालिकाओं में बच्चों और युवा वयस्कों के लिए अस्पताल में भर्ती होने और अस्थमा से मृत्यु की दर कम होने की संभावना कम हो गई है। [34,35,36] यह खोज इंगित करती है कि शहरीकरण का जनसंख्या स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, विशेष रूप से अस्थमा के प्रति लोगों की संवेदनशीलता को प्रभावित करता है। [77]

निम्न और मध्यम आय वाले देशों में अस्थमा से पीड़ित लोगों की उच्च संख्या में कई कारक योगदान करते हैं।[49,50,51] बढ़ते शहरीकरण वाले संयुक्त राज्य अमेरिका के क्षेत्रों के समान, कम आय वाले देशों में बढ़ते शहरों में रहने वाले लोग वायु प्रदूषण के उच्च जोखिम का अनुभव करते हैं, जिससे इन आबादी में अस्थमा की व्यापकता और गंभीरता बढ़ जाती है। [78] यातायात संबंधी वायु प्रदूषण और एलर्जी संबंधी बीमारियों के बीच संपर्क पाया गया है।

भौगोलिक अलगाव, व्यस्त और असुरक्षित सड़कें, और सामाजिक लांछन जैसी बाधाओं के कारण ग्रामीण परिवेश में शारीरिक गतिविधियों में कमी आती है। [90] ग्रामीण सड़कों पर तेज गति सीमा सड़कों के किनारे बाइक लेन, फुटपाथ, फुटपाथ और कंधों की क्षमता को प्रतिबंधित करती है। [87] ग्रामीण क्षेत्रों में कम विकसित खुले स्थान, जैसे पार्क और ट्रेल्स, सुझाव देते हैं कि शहरी क्षेत्रों की तुलना में इन क्षेत्रों में चलने की क्षमता कम है। [87] ग्रामीण परिवेश में कई निवासियों को व्यायाम सुविधाओं का उपयोग करने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है, दिन में बहुत अधिक समय लगता है और निवासियों को शारीरिक गतिविधि प्राप्त करने के लिए मनोरंजक सुविधाओं का उपयोग करने से रोकते हैं। [90]इसके अतिरिक्त, ग्रामीण समुदायों के निवासी काम के

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

लिए और अधिक यात्रा कर रहे हैं,[46,47,48] अवकाश शारीरिक गतिविधि पर खर्च किए जा सकने वाले समय की मात्रा कम हो रही है और काम करने के लिए सक्रिय परिवहन में भाग लेने का अवसर काफी कम हो गया है। [87]

आस-पड़ोस और आस-पास के फिटनेस स्थानों वाले समुदाय, शहरीकरण की एक सामान्य विशेषता, ऐसे निवासी हैं जो अधिक मात्रा में शारीरिक गतिविधि में भाग लेते हैं। [90] फुटपाथ, स्ट्रीट लाइट और ट्रैफिक सिग्नल वाले समुदायों में उन सुविधाओं के बिना समुदायों की तुलना में निवासी अधिक शारीरिक गतिविधि में भाग लेते हैं। [87] लोगों के रहने के स्थान के पास विभिन्न प्रकार के गंतव्य होने से सक्रिय परिवहन के उपयोग में वृद्धि होती है, जैसे पैदल चलना और बाइक चलाना। [91] शहरी समुदायों में सक्रिय परिवहन को भी बढ़ाया जाता है जहां निवासियों के चलने या बाइक चलाने के कारण सार्वजनिक परिवहन तक आसान पहुंच है। [91]

बढ़ा हुआ तनाव एक सामान्य व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक तनाव है जो शहरीकरण के साथ होता है और माना जाता है कि यह कथित असुरक्षा के कारण होता है। सामाजिक संगठन में परिवर्तन, शहरीकरण का एक परिणाम, कम सामाजिक समर्थन, बढ़ी हुई हिंसा और भीड़भाड़ का कारण माना जाता है। माना जाता है कि ये ऐसे कारक हैं जो बढ़ते तनाव में योगदान करते हैं। [94] यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि शहरीकरण या जनसंख्या घनत्व अकेले मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का कारण नहीं बनता है। यह शारीरिक और सामाजिक जोखिम वाले कारकों के साथ शहरीकरण का संयोजन है जो मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं में योगदान देता है। [37,38,39]जैसे-जैसे शहरों का विस्तार जारी है, शहरीकरण के साथ-साथ अन्य सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य पर विचार करना और उसका लेखा-जोखा रखना महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

भारत के लिए वंचित तबके की जिंदगी में सुधार लाना जरूरी है. इसकी खातिर उसे निकाय संबंधित मामलों में लोगों की भागीदारी बढ़ानी होगी. साथ ही, बढ़ती आबादी को नियंत्रित करने पर भी ध्यान देना होगा. अभी शहरी इलाकों के लिए केंद्र[43,44,45] और राज्य स्तर पर अटल मिशन फॉर रिजूवेनेशन एंड अर्बन ट्रांसफॉर्मेशन (अमृत), हाउसिंग फॉर ऑल, स्मार्ट सिटीज, स्वच्छ भारत और रर्बन मिशंस, जैसी योजनाएं चल रही हैं. इनके जरिये देश के शहरीकरण को अच्छी तरह से मैनेज किया जा सकता है. शहरीकरण का फायदा समाज के हर वर्ग तक पहुंचे, इसके लिए केंद्र, राज्य और स्थानीय प्रशासन को मिलकर काम करना होगा.[40,41,42]

संदर्भ

1. "शहरीकरण" । मेश ब्राउज़र । चिकित्सा के राष्ट्रीय पुस्तकालय। 16 मार्च 2016 को मूल से संग्रहीत । 5 नवंबर 2014 को पुनःप्राप्त । वह प्रक्रिया जिसके द्वारा एक समाज ग्रामीण से शहरी जीवन शैली में बदलता है। यह शहरी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के अनुपात में क्रमिक वृद्धि को भी संदर्भित करता है।
2. ^ "शहरीकरण में" । जनसांख्यिकीय विभाजन । 22 अक्टूबर 2018 को मूल से संग्रहीत । 8 जुलाई 2015 को पुनःप्राप्त ।
3. ^ टैकोली, सेसिलिया (2015)। शहरीकरण, ग्रामीण-शहरी प्रवास और शहरी गरीबी । मैकग्रानाहन, गॉर्डन, सैटरथवेट, डेविड। लंदन: पर्यावरण और विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय संस्थान। आईएसबीएन 9781784311377. ओसीएलसी 942419887 .
4. ^ "शहरी जीवन: ओपन-एयर कंप्यूटर" । अर्थशास्त्री । 27 अक्टूबर 2012। 5 सितंबर 2017 को मूल से संग्रहीत । 20 मार्च 2013 को पुनःप्राप्त ।
5. ^ "शहरीकरण" । यूएनएफपीए - संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष । मूल से 26 मई 2020 को पुरालेखित । 11 मई 2015 को पुनःप्राप्त ।
6. ^ बार्नी कोहेन (2015)। "शहरीकरण, शहर का विकास, और नया संयुक्त राष्ट्र विकास एजेंडा" । वॉल्यूम। 3, नहीं। 2. आधारशिला, विश्व कोयला उद्योग का आधिकारिक जर्नल। पीपी. 4-7. 27 जून 2015 को मूल से संग्रहीत । 26 जून 2015 को पुनःप्राप्त ।
7. ↑ दत्त, एके; नोबल, एजी; वेणुगोपाल, जी.; सुब्बैया, एस. (2006). 21वीं सदी में एशियाई शहरीकरण की चुनौतियां । जियोजर्नल लाइब्रेरी। स्प्रिंगर नीदरलैंड। आईएसबीएन 978-1-4020-2531-0. 22 मार्च 2019 को पुनःप्राप्त ।
8. ^ श्रीधर, केएस; मावरोतास, जी. (2020). ग्लोबल साउथ में शहरीकरण: परिप्रेक्ष्य और चुनौतियां । टेलर और फ्रांसिस। आईएसबीएन 978-1-000-42636-6. 22 मार्च 2019 को पुनःप्राप्त ।

9. ↑ ग्रिस, टी.; ग्रंडमैन, आर। (2018)। "उर्वरता और आधुनिकीकरण: विकासशील देशों में शहरीकरण की भूमिका"। जर्नल ऑफ इंटरनेशनल डेवलपमेंट । 30 (3): 493-506। डीओआई : 10.1002/jid.3104 ।
10. ↑ इंट्रोडक्शन टू सोशल मैक्रोडायनामिक्स: सेक्युलर साइकल्स एंड मिलेनियल ट्रेंड्स। 18 सितंबर 2018 को वेबैक मशीन मॉस्को में संग्रहीत : यूआरएसएस, 2006; कोरोटायेव ए। विश्व प्रणाली शहरीकरण की गतिशीलता। इतिहास और गणित: जटिल समाजों की ऐतिहासिक गतिशीलता और विकास 29 फरवरी 2020 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत । पीटर टर्चिन , लियोनिद ग्रिनिन , एंड्री कोरोटायेव और विक्टर सी. डी मुनकद्वारा संपादितमॉस्को: कोम्रिगा, 2006। द वर्ल्ड सिस्टम अर्बनाइज़ेशन डायनामिक्स। इतिहास और गणित: ऐतिहासिक गतिशीलता और जटिल समाजों का विकास 29 फरवरी 2020 को संग्रहीत किया गया वेबैक मशीन । पीटर टर्चिन , लियोनिद ग्रिनिन , एंड्री कोरोटायेव और विक्टर सी. डी मुनक द्वारा संपादित । मॉस्को: कोमक्निगा, 2006. आईएसबीएन 5-484-01002-0 । प. 44-62
11. ^ "पिछले 500 वर्षों में शहरीकरण" । डेटा में हमारी दुनिया । मूल से 14 मार्च 2020 को पुरालेखित । 6 मार्च 2020 को पुनःप्राप्त ।
12. ^ स्टीफेंस, लुकास; फुलर, डोरियन; बोइविन, निकोल; रिक, तोरबेन; गौथियर, निकोलस; के, एंड्रिया; मार्विक, बेन; आर्मस्ट्रांग, चेल्सी गेराल्डा; बार्टन, सी। माइकल (30 अगस्त 2019)। "पुरातात्विक मूल्यांकन से भूमि उपयोग के माध्यम से पृथ्वी के प्रारंभिक परिवर्तन का पता चलता है"। विज्ञान । 365 (6456): 897–902। बिबकोड : 2019Sci...365..897S . डीओआई : 10.1126/विज्ञान.एएक्स1192 । एचडीएल : 10150/634688 । आईएसएसएन 0036-8075 । पीएमआईडी 31467217 । एस2सीआईडी 201674203 .
13. ^ एंड्री कोरोटायेव और लियोनिद ग्रिनी (2006)। "विश्व व्यवस्था का शहरीकरण और राजनीतिक विकास: एक तुलनात्मक मात्रात्मक विश्लेषण" । पीटर टर्चिन में; लियोनिद ग्रिनिन; विक्टर सी. डी मुनक; और एंड्री कोरोटायेव (सं।)। इतिहास और गणित: ऐतिहासिक गतिशीलता और जटिल समाजों का विकास । वॉल्यूम। 2. पीपी। 115-153। मूल से 16 अगस्त 2020 को पुरालेखित । 23 जून 2016 को पुनःप्राप्त ।
14. ^ "औद्योगिक क्रांति | परिभाषा, इतिहास, दिनांक, सारांश, और तथ्य" । एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका । मूल से 31 अक्टूबर 2020 को पुरालेखित । 29 अक्टूबर 2020 को पुनःप्राप्त ।
15. ^ क्रिस्टोफर वाटसन (1993)। केबी वाइल्ड; Wm एच. रॉबिन्सन (संपा.). शहरीकरण में रुझान । शहरी कीट पर प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही। साइटसेरएक्स 10.1.1.522.7409 ।
16. ^ एनेज़, पेट्रीसिया क्लार्क; बकले, रॉबर्ट एम. (2009)। "शहरीकरण और विकास: संदर्भ स्थापित करना" (पीडीएफ) । स्पेंस में, माइकल; एनेज़, पेट्रीसिया क्लार्क; बकले, रॉबर्ट एम. (संस्करण)। शहरीकरण और विकास । आईएसबीएन 978-0-8213-7573-0. 25 मई 2017 को मूल से संग्रहीत (पीडीएफ) । 9 नवंबर 2013 को पुनःप्राप्त ।
17. ^ रेबा, मेरेडिथ; रीत्स्मा, फेमके; सेटो, करेन सी। (7 जून 2016)। "3700 ईसा पूर्व से 2000 ईस्वी तक वैश्विक शहरीकरण के 6,000 वर्षों का स्थानिककरण" । वैज्ञानिक डेटा । 3 : 160034. बिबकोड : 2016NatSD...360034R . डीओआई : 10.1038/sdata.2016.34 । आईएसएसएन 2052-4463 । पीएमसी 4896125 । पीएमआईडी 27271481 ।
18. ^ "रिसर्च डेटा-सेटो लैब" । शहरी.याले.edu . 18 मई 2019 को मूल से संग्रहीत । 9 जुलाई 2016 को पुनःप्राप्त ।
19. ^ "शहरीकरण का इतिहास, 3700 ईसा पूर्व - 2000 ईस्वी" । यूट्यूब । मूल से 30 अक्टूबर 2020 को पुरालेखित । 24 सितंबर 2018 को पुनःप्राप्त ।
20. ^ 2000 अमेरिकी जनगणना के आंकड़ों पर आधारित
21. ^ फुलर, थॉमस (5 जून 2012)। "थाई यूथ सीक ए फॉर्च्यून अवे फ्रॉम फार्म" । द न्यूयॉर्क टाइम्स । मूल से 5 जून 2012 को पुरालेखित । 5 जून 2012 को पुनःप्राप्त ।
22. ^ जिल्लारिन, नट्टीनी; कोसुलवत, वोंगस्वत; रोजरोंगवासिंकल, निपा; बूनप्रडर्म, अटिटाडा; हैडॉक, क्रिस्टोफर के.; पोस्टन, वाकर एस.सी.; जिल्लारिन, नट्टीनी; कोसुलवत, वोंगस्वत; रोजरोंगवासिंकल, निपा (21 जनवरी 2010)। "थाई वयस्कों के बीच अधिक वजन और मोटापे के लिए जोखिम कारक: राष्ट्रीय थाई खाद्य उपभोग सर्वेक्षण के परिणाम" । पोषक तत्व । 2 (1): 60-74। डीओआई : 10.3390/nu2010060 . पीएमसी 3257614 । पीएमआईडी 22253992 ।
23. ↑ "भारत में जल्दी मृत्यु सुनिश्चित, जहां 900 मिलियन भूखे रहते हैं" । ब्लूमबर्ग। 13 जून 2012। मूल से 14 जून 2012 को पुरालेखित । 13 जून 2012 को पुनःप्राप्त ।

24. ^ यहां तक जायें:ए बी "शहरीकरण, लिंग और शहरी गरीबी: शहर में भुगतान कार्य और अवैतनिक देखभाल कार्य" । यूएनएफपीए। 2012. मूल से 22 जुलाई 2015 को पुरालेखित । 11 मई 2015 को पुनःप्राप्त ।
25. ^ बोरोविकी, करोल जे। (2013)। "भौगोलिक क्लस्टरिंग और उत्पादकता: शास्त्रीय संगीतकारों के लिए एक वाद्य चर दृष्टिकोण" । जर्नल ऑफ अर्बन इकोनॉमिक्स । 73 (1): 94–110। डीओआई : 10.1016/जे.जू.2012.07.004 । 8 जुलाई 2017 को मूल से संग्रहीत । 9 नवंबर 2015 को पुनःप्राप्त ।
26. ↑ KOSIS, कोरियन स्टैटिस्टिकल इंफॉर्मेशन सर्विस आर्काइव्ड 26 अगस्त 2013 at the Wayback Machine । (कोरियाई में)
27. ^ जैकब्स, एजे (2011)। "उल्सान, साउथ कोरिया: ए ग्लोबल एंड नेस्टेड 'ग्रेट' इंडस्ट्रियल सिटी" (पीडीएफ) । द ओपन अर्बन स्टडीज जर्नल । 4 (8-20): 8-20। डीओई : 10.2174/1874942901104010008 . 24 जून 2020 को मूल से संग्रहीत (पीडीएफ) । 27 मई 2020 को पुनःप्राप्त - core.ac.uk के माध्यम से।
28. ^ बेनेडिक्टस, लियो (12 मई 2017)। "हवा में बहना: इतने सारे शहरों के पूर्व छोर खराब क्यों हैं?" . द गार्जियन । 12 मई 2017 को मूल से संग्रहीत । 12 मई 2017 को पुनःप्राप्त ।
29. ^ अनुदान, उर्सुला (2008) शहरी श्रम बाजारों में अवसर और शोषण 18 सितंबर 2012 को वेबैक मशीन लंदन में संग्रहीत : विदेशी विकास संस्थान
30. ↑ टोडारो, माइकल पी. (1969)। "कम विकसित देशों में श्रम प्रवासन और शहरी बेरोजगारी का एक मॉडल"। अमेरिकी आर्थिक समीक्षा । 59 (1): 148।
31. ^ ग्लेसर, एडवर्ड (स्प्रिंग 1998)। "क्या शहर मर रहे हैं?" . जर्नल ऑफ इकोनॉमिक पर्सपेक्टिव्स । 12 (2): 139–60। डीओआई : 10.1257/जेप.12.2.139 ।
32. ^ ब्रांड, स्टीवर्ट। "संपूर्ण पृथ्वी अनुशासन - एनोटेट अर्क" । 15 जनवरी 2012 को मूल से संग्रहीत । 29 नवंबर 2009 को पुनःप्राप्त ।
33. ↑ नोवाक, जे. (1997)। "पड़ोस पहल और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था"। आर्थिक विकास त्रैमासिक । 11 : 3–10. डीओआई : 10.1177/089124249701100101 । एस2सीआईडी 154678238 .
34. ^ गैल-पीटर्स प्रोजेक्शन का उपयोग करते हुए अनुमान लगाया गया है कि 2015 तक दुनिया की शहरी आबादी 4 अरब से अधिक हो जाएगी, इस वृद्धि में से अधिकांश अफ्रीका और एशिया और चीन में 50% शहरीकृत होने की उम्मीद है।
35. ^ "विश्व जनसंख्या 2014 की स्थिति" । यूएनएफपीए। 2014. 12 सितंबर 2018 को मूल से संग्रहीत । 11 मई 2015 को पुनःप्राप्त ।
36. ^ यासीन, इफ्तिखार; अहमद, नवाज़; चौधरी, एम. असलम (22 जुलाई 2019)। "शहरीकरण, वित्तीय विकास, और राजनीतिक संस्थानों के पर्यावरण-प्रभाव को ध्यान में रखते हुए: 110 विकसित और कम-विकसित देशों में पारिस्थितिक पदचिह्नों की एक परिस्थिति"। सामाजिक संकेतक अनुसंधान । 147 (2): 621–649। डीओआई : 10.1007/एस11205-019-02163-3 । आईएसएसएन 0303-8300 । एस2सीआईडी 199855869 .
37. ↑ "शहरीकरण: एक पर्यावरण बल के साथ गणना की जानी चाहिए" । 3 दिसंबर 2019 को मूल से संग्रहीत । 19 जुलाई 2019 को पुनःप्राप्त ।
38. ↑ कार्बन जीरो: इमेजिनिंग सिटीज दैट सेव द प्लैनेट बाय एलेक्स स्टीफेन
39. ^ "विश्व आर्थिक और सामाजिक सर्वेक्षण (WESS) 2013" 7 अप्रैल 2014 को वेबैक मशीन वर्ल्ड इकोनॉमिक एंड सोशल अफेयर्स पर संग्रहीत । जुलाई 2013।
40. ^ ऑबेर, तामार (17 जुलाई 2013) "अफ्रीका में जलवायु परिवर्तन और तेजी से शहरी विस्तार से बच्चों के जीवन को खतरा है।" 13 नवंबर 2014 को वेबैक मशीन UNEARTH न्यूज़ पर संग्रहीत । 10 अगस्त 2013 को पुनःप्राप्त।
41. ↑ पार्क, एच.-एस. (1987)। भौगोलिक वातावरण से प्रभावित शहरी ताप द्वीप की तीव्रता में बदलाव । पर्यावरण अनुसंधान केंद्र कागजात, नहीं। 11. इबाराकी, जापान: पर्यावरण अनुसंधान केंद्र, सुकुबा विश्वविद्यालय।
42. ^ "हीट आइलैंड इफेक्ट" 14 अगस्त 2015 को वेबैक मशीन पर संग्रहीत । Epa.gov (17 नवंबर 2010)। 7 अप्रैल 2014 को पुनःप्राप्त।
43. ↑ "ताप बढ़ रहा है: अध्ययन चीन में तेजी से शहरीकरण दिखाता है, क्षेत्रीय जलवायु को अन्य शहरी क्षेत्रों की तुलना में तेजी से गर्म कर रहा है" । मूल से 20 अक्टूबर 2019 को पुरालेखित । 31 जुलाई 2008 को पुनःप्राप्त ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

44. ^ जियांग, लीवेन; होपफ यंग, मालिया; हार्डी, करेन (2008)। "जनसंख्या, शहरीकरण, और पर्यावरण"। विश्व घड़ी । 21 (5): 34-39।
45. ^ "यूट्रोफिकेशन के बारे में | विश्व संसाधन संस्थान" । wri.org । 12 सितंबर 2013। मूल से 19 नवंबर 2018 को पुरालेखित । 18 नवंबर 2018 को पुनःप्राप्त ।
46. ^ "हानिकारक अल्गल ब्लूम्स" । अमेरिकी पर्यावरण संरक्षण प्रशासन । 3 जून 2013। मूल से 4 फरवरी 2020 को पुरालेखित । 18 नवंबर 2018 को पुनःप्राप्त ।
47. ^ रमेश, आर; लक्ष्मी, ए; पूर्वजा, आर; कोस्टांजो, एसडी; केल्सी, आरएच; हॉक, जे; दत्ता, ए; डेनिसन, डब्ल्यूसी (2013)। "यूट्रोफिकेशन एंड ओशन एसिडिफिकेशन" (पीडीएफ) । 21 अप्रैल 2020 को मूल से संग्रहीत (पीडीएफ) । 18 नवंबर 2018 को पुनःप्राप्त ।
48. ^ "राष्ट्रीय जलवायु आकलन" । राष्ट्रीय जलवायु आकलन । 18 नवंबर 2018 को मूल से संग्रहीत । 18 नवंबर 2018 को पुनःप्राप्त ।
49. ↑ फीली, रिचर्ड ए.; एलिन, सिमोन आर.; न्यूटन, जनवरी; सबाइन, क्रिस्टोफर एल.; वार्नर, मार्क; देवोल, एलन; क्रेम्ब्स, क्रिस्टोफर; मैलोय, कैरल (अगस्त 2010)। "शहरी मुहाना में पीएच और कार्बोनेट संतृप्ति पर समुद्र के अम्लीकरण, मिश्रण और श्वसन के संयुक्त प्रभाव"। मुहानों, तटीय और शेल्फ विज्ञान । 88 (4): 442-449। बिबकोड : 2010ECSS...88..442F . डीओआई : 10.1016/जे.ईसीएसएस.2010.05.004 । आईएसएसएन 0272-7714 ।
50. ^ फिशरीज, एनओएए (9 सितंबर 2018)। "महासागर अम्लीकरण को समझना | एनओएए मत्स्य पालन" । मत्स्य पालन.noaa.gov । 19 नवंबर 2018 को मूल से संग्रहीत । 18 नवंबर 2018 को पुनःप्राप्त ।
51. ^ "महासागर अम्लीकरण" । स्मिथसोनियन महासागर । मूल से 9 नवंबर 2020 को पुरालेखित । 18 नवंबर 2018 को पुनःप्राप्त ।
52. ↑ थिबर्ग, क्रिस्टा एल.; टोंजेस, डेविड जे। (2016)। "खाद्य अपशिष्ट के चालक और सतत नीति विकास के लिए उनके प्रभाव" । संसाधन, संरक्षण और पुनर्चक्रण । 106 : 110–123. डीओआई : 10.1016/j.resconrec.2015.11.016 । आईएसएसएन 0921-3449 । एस2सीआईडी 30784882 . 27 दिसंबर 2019 को मूल से संग्रहीत । 31 अक्टूबर 2018 को लिया गया ।
53. ^ "अनुच्छेद:" शहरी खाद्य अपशिष्ट उत्पादन: चुनौतियां और अवसर "जर्नल: पर्यावरण और अपशिष्ट प्रबंधन का इंट. जे., 2009 खंड 3 नंबर 1/2 पीपी.4 - 21 सार: अधिक आर्थिक गतिविधि और बीच में एक व्यापक आर्थिक अंतर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में तेजी से शहरीकरण हो रहा है और 2007 से 2025 तक 35% अधिक शहरी खाद्य अपशिष्ट (UFW) का उत्पादन हो रहा है। लैंडफिलिंग के अलावा, यह पेपर UFW के पर्यावरणीय पुनर्चक्रण के लिए ऑनसाइट खाद और अवायवीय पाचन शुरू करने के लाभों की जांच करता है। हैंडलिंग लागत में कमी। एशिया और अफ्रीका के लिए, UFW के लिए ये समाधान MSW के द्रव्यमान को क्रमशः 43% और 55% तक कम कर सकते हैं, इस प्रकार शहरों को अपने लगभग सभी MSW का प्रबंधन करने में मदद मिलती है। उत्तरी अमेरिका और यूरोप के लिए, इस तरह की प्रथा कम हो सकती है पृथ्वी के गर्म होने के रुझान - इंडर्साइंस पब्लिशर्स - लिंकिंग एकेडेमिया,अनुसंधान के माध्यम से व्यापार और उद्योग". inderscience.com । 1 नवंबर 2018 को मूल से संग्रहीत । 7 अक्टूबर 2018 को पुनःप्राप्त ।
54. ^ अधिकारी, बिजय के।; बैरिंगटन, सुज़ेल; मार्टिनेज, जोस (अक्टूबर 2006)। "विश्व शहरी खाद्य अपशिष्ट और मीथेन उत्पादन की अनुमानित वृद्धि"। अपशिष्ट प्रबंधन और अनुसंधान । 24 (5): 421-433। डीओई : 10.1177/0734242X06067767 . आईएसएसएन 0734-242X । पीएमआईडी 17121114 . एस2सीआईडी 34299202 .
55. ↑ अधिकारी, बिजय के.; बैरिंगटन, सुजेल एफ.; मार्टिनेज, जोस (2009)। "शहरी खाद्य अपशिष्ट उत्पादन: चुनौतियां और अवसर" (पीडीएफ) । पर्यावरण और अपशिष्ट प्रबंधन का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल । 3 (1/2): 4. डोई : 10.1504/ijewm.2009.024696 । आईएसएसएन 1478-9876 । एस2सीआईडी 96476310 . 26 जुलाई 2018 को मूल से संग्रहीत (पीडीएफ) । 1 फरवरी 2019 को पुनःप्राप्त ।
56. ^ "वेक्टर जनित रोग" । विश्व स्वास्थ्य संगठन । मूल से 4 जनवरी 2019 को पुरालेखित । 19 अक्टूबर 2018 को पुनःप्राप्त ।
57. ^ ईपीए, ओए, यूएस (23 दिसंबर 2015)। "ग्रीनहाउस गैसों का अवलोकन | यूएस ईपीए" । यूएस ईपीए । 12 अगस्त 2016 को मूल से संग्रहीत । 16 अक्टूबर 2018 को पुनःप्राप्त ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

58. ^ वेंकटेश्वरन, संध्या (1994)। "अपशिष्ट प्रबंधन: पारिस्थितिक, आर्थिक और सामाजिक आयाम"। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक । 29 (45/46): 2907–2911। जेएसटीओआर 4401996 ।
59. ^ बाई, ज़ेमेई; मैकफर्सन, टिमोन; क्लूग, हेलेन; नागेंद्र, हरिणी; टोंग, ज़िन; झू, टोंग; झू, योंग-गुआन (17 अक्टूबर 2017)। "शहरीकरण और पर्यावरण को जोड़ना: वैचारिक और अनुभवजन्य प्रगति" । पर्यावरण और संसाधनों की वार्षिक समीक्षा । 42 (1): 215–240। डीओआई : 10.1146/अनुरेव-पर्यावरण-102016-061128 । आईएसएसएन 1543-5938 । मूल से 23 अक्टूबर 2020 को पुरालेखित । 2 नवंबर 2020 को पुनःप्राप्त ।
60. ^ एल्मक्विस्ट, थॉमस; ज़िप्परर, वेन; गुनेराल्प, बुराक (2016)। "10"। शहरीकरण, आवास हानि, जैव विविधता में गिरावट: चक्र को तोड़ने के लिए समाधान मार्ग । पीपी। 139-151।
61. ^ लियू जेड, हे सी, वू जे (2016)। "शहरीकरण के दौरान आवास हानि और विखंडन के बीच संबंध: 16 विश्व शहरों से एक अनुभवजन्य मूल्यांकन" । प्लस वन । 11 (4): ई0154613। बिबकोड : 2016PLoSO..1154613L । डीओआई : 10.1371/journal.pone.0154613 । पीएमसी 4849762 । पीएमआईडी 27124180 ।
62. ↑ स्केगन, सुसान के.; याकेल एडम्स, एमी ए.; एडम्स, रॉड डी। (2005)। "नेस्ट सर्वाइवल रिलेटिव टू पैच साइज इन ए हाईली फ्रैगमेंटेड शॉर्टग्रास प्रेयरी लैंडस्केप" । विल्सन बुलेटिन । 117 : 23–34. डीओई : 10.1676/04-038 . एस2सीआईडी 85173365 . मूल से 27 फरवरी 2020 को पुरालेखित । 25 दिसंबर 2020 को पुनःप्राप्त ।
63. ^ "आवास विखंडन और वन्यजीव कॉरिडोर" (पीडीएफ) । 25 सितंबर 2019 को मूल से संग्रहीत (पीडीएफ) । 11 जुलाई 2019 को पुनःप्राप्त ।
64. ^ "आवास विखंडन - व्यावहारिक विचार" । वन अनुसंधान। मूल से 24 सितंबर 2019 को पुरालेखित । 4 अगस्त 2019 को पुनःप्राप्त । फ़ुटपाथ, नदियाँ और नहर जैसी सुविधाएँ पहले से ही कई शहरी क्षेत्रों में ग्रीन कॉरिडोर प्रदान करती हैं। ग्रीनस्पेस जो कई प्रजातियों के लिए उपयुक्त प्रजनन आवास नहीं है, अभी भी पारगम्यता में सुधार करने के लिए काम कर सकता है, और इसलिए प्रजनन स्थलों के बीच आंदोलन कर सकता है।
65. ^ मैककिनी, माइकल एल। (29 जनवरी 2008)। "प्रजातियों की समृद्धि पर शहरीकरण का प्रभाव: पौधों और जानवरों की समीक्षा"। शहरी पारिस्थितिक तंत्र । 11 (2): 161-176। डीओआई : 10.1007/एस11252-007-0045-4 । आईएसएसएन 1083-8155 । एस2सीआईडी 23353943 .
66. ^ सिडेमो-होल्म, विलियम; एकरोस, जोहान; रीना गार्सिया, सैंटियागो; सॉडरस्ट्रॉम, बो; हेडब्लोम, मार्कस (2019)। "शहरीकरण कई स्थानिक पैमानों पर वुडलैंड पक्षी समुदायों के जैविक समरूपीकरण का कारण बनता है" । ग्लोबल चेंज बायोलॉजी । 28 (21): 6152–6164। डीओआई : 10.1111/जीसीबी.16350 । पीएमसी 9804485 । पीएमआईडी 35983686 .
67. ↑ लुंडकविस्ट, ई.; लैंडिन, जे.; कार्लसन, एफ। (2002)। "दक्षिण-पूर्वी स्वीडन में कृषि और शहरी परिदृश्य में डाइविंग बीटल (Dytiscidae) फैलाना"। एनालेस जूलॉजिक फेनीसी ।
68. ^ लियाओ, डब्ल्यू।; वेन, एस.; नीमेला, जे। (2020)। "शहरी परिदृश्य में डाइविंग बीटल असेंबलियों (कोलॉप्टेरा: डायटिसिडे) के पर्यावरण निर्धारक" । जैव विविधता और संरक्षण । 29 (7): 2343–2359। डीओआई : 10.1007/एस10531-020-01977-9 .
69. ^ मैककिनी, माइकल (अक्टूबर 2002)। "शहरीकरण, जैव विविधता और संरक्षण" । बायोसाइंस । 52 (10): 883. डीओआई : 10.1641/0006-3568(2002)052[0883:UBAC]2.0.CO;2 .
70. ↑ "भीड़-भाड़ वाले हलिंग थरयार टाउनशिप में, गेटेड कम्युनिटीज (sic) के बगल में झुग्गियां बसी हुई हैं | कोकोनट यांगून" । 22 फरवरी 2016। मूल से 10 जून 2016 को पुरालेखित । 27 मई 2016 को पुनःप्राप्त ।
71. ^ एकर्ट एस, कोहलर एस (2014)। "विकासशील देशों में शहरीकरण और स्वास्थ्य: एक व्यवस्थित समीक्षा" । विश्व स्वास्थ्य और जनसंख्या । 15 (1): 7–20। डीओआई : 10.12927/व्हाप.2014.23722 । पीएमआईडी 24702762 । मूल से 7 फरवरी 2020 को पुरालेखित । 20 सितंबर 2019 को पुनःप्राप्त ।
72. ^ एलेंडर एस, फोस्टर सी, हचिंसन एल, अराम्बेपोला सी (नवंबर 2008)। "विकासशील देशों में पुरानी बीमारियों के संबंध में शहरीकरण की मात्रा: एक व्यवस्थित समीक्षा" । शहरी स्वास्थ्य जर्नल । 85 (6): 938-51। डीओआई : 10.1007/एस11524-008-9325-4 . पीएमसी 2587653 । पीएमआईडी 18931915 ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

73. ↑ ब्लॉक, जेसन पी.; सुब्रमण्यन, एसवी (8 दिसंबर 2015)। "मूविंग बियॉन्ड "फूड डेजर्ट्स": रिओरिएंटिंग युनाइटेड स्टेट्स पॉलिसीज़ टू रिड्यूस डिसपैरिटीज़ इन डाइट क्वालिटी"। पीएलओएस मेडिसिन। 12 (12): ई1001914। डीओआई : 10.1371/journal.pmed.1001914 । आईएसएसएन 1549-1676 । पीएमसी 4672916 । पीएमआईडी 26645285 ।

74. ^ घोष-दस्तीदार, बोनी; कोहेन, दबोरा; हंटर, जेराल्ड; ज़ेंक, शैनन एन.; हुआंग, क्रिस्टीना; बेकमैन, रॉबिन; डबोविट्ज, तमारा (2014)। "शहरी खाद्य रेगिस्तानों में स्टोर करने की दूरी, खाद्य मूल्य और मोटापा"। अमेरिकन जर्नल ऑफ प्रिवेंटिव मेडिसिन। 47 (5): 587-595। डीओआई : 10.1016/जे.एएमईपीआर.2014.07.005 । पीएमसी 4205193 । पीएमआईडी 25217097 ।

75. ^ कुकी-स्टोवर्स, क्रिस्टन; श्वार्ट्ज, मार्लीन बी.; ब्राउनेल, केली डी। (14 नवंबर 2017)। "खाद्य दलदल संयुक्त राज्य अमेरिका में खाद्य रेगिस्तान से बेहतर मोटापे की भविष्यवाणी करता है"। पर्यावरण अनुसंधान और सार्वजनिक स्वास्थ्य के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 14 (11): 1366. डोई : 10.3390/ijerph14111366 । पीएमसी 5708005 । पीएमआईडी 29135909 .

76. ^ स्टिली, मेगन (2012)। शहरी खाद्य रेगिस्तान: डेनवर (थीसिस) में उत्तरी पड़ोस की खोज । डेनवर में कोलोराडो विश्वविद्यालय। प्रोक्वेस्ट 1013635534 .

77. ^ पोंटे, एडुआर्डो विएरा; क्रूज़, अल्वारो ए.; अथानाज़ियो, रोड्रिगो; कार्वाल्हो-पिंटो, रेजिना; फर्नांडीस, फ्रेडरिको एलए; बैरेटो, मौरिसियो एल.; स्टेलमच, राफेल (1 फरवरी 2018)। "ब्राजील में शहरीकरण अस्थमा रुग्णता और मृत्यु दर में वृद्धि के साथ जुड़ा हुआ है"। द क्लिनिकल रेस्पिरेटरी जर्नल। 12 (2): 410–417। डीओआई : 10.1111/सीआरजे.12530 । आईएसएसएन 1752-699X । पीएमआईडी 27400674 . एस2सीआईडी 46804746 .

78. ↑ क्रूज़, अलवारो ए.; स्टेलमच, राफेल; पोंटे, एडुआर्डो वी। (1 जून 2017)। "अस्थमा प्रसार और कम संसाधन वाले समुदायों में गंभीरता"। एलर्जी और क्लिनिकल इम्यूनोलॉजी में वर्तमान राय। 17 (3): 188-193। डीओआई : 10.1097/एसीआई.0000000000000360 । आईएसएसएन 1528-4050 । पीएमआईडी 28333691 । एस2सीआईडी 6018699 .

79. कार्ल्स्टन, क्रिस्टोफर; राइडर, क्रिस्टोफर एफ। (1 अप्रैल 2017)। "यातायात से संबंधित वायु प्रदूषण और एलर्जी रोग"। एलर्जी और क्लिनिकल इम्यूनोलॉजी में वर्तमान राय। 17 (2): 85-89। डीओआई : 10.1097/एसीआई.0000000000000351 । आईएसएसएन 1528-4050 । पीएमआईडी 28141628 । एस2सीआईडी 38066984 .

80. ↑ कीट, कोरिने ए.; मात्सुई, एलिजाबेथ सी.; मैककॉर्मैक, मेरेडिथ सी.; पेंग, रोजर डी। (सितंबर 2017)। "मेडिकेड पर बच्चों के बीच शहरी निवास, पड़ोस की गरीबी, नस्ल / जातीयता, और अस्थमा रुग्णता"। जर्नल ऑफ एलर्जी एंड क्लिनिकल इम्यूनोलॉजी। 140 (3): 822-827। डीओआई : 10.1016/जे.जेसीआई.2017.01.036 । पीएमसी 8050806 । पीएमआईडी 28283418 ।

81. ^ लिन, शेंग-चीह; लिन, हुई-वेन; चियांग, बोर-लुएन (1 सितंबर 2017)। "बच्चों में दमा के साथ क्रुप का जुड़ाव"। औषधि। 96 (35): ई7667। डीओआई : 10.1097/एमडी.0000000000007667 । आईएसएसएन 0025-7974 । पीएमसी 5585480 । पीएमआईडी 28858086 ।

82. ^ प्रुनिकी, मैरी; स्टेल, लॉरेल; दिनकरपांडियन, दीनदयाल; डी प्लानेल-सागुएर, मारियांगेल्स; लुकास, रिचर्ड डब्ल्यू.; हैमंड, एस. कैथरीन ; बाल्म्स, जॉन आर.; झोउ, शियाओयिंग; पगलिनो, तारा (5 जनवरी 2018)। "NO2, CO, और PM2.5 का एक्सपोजर अस्थमा में क्षेत्रीय डीएनए मेथिलिकरण अंतर से जुड़ा हुआ है"। क्लिनिकल एपिजेनेटिक्स। 10 : 2. डीओआई : 10.1186/एस13148-017-0433-4 . आईएसएसएन 1868-7083 । पीएमसी 5756438 । पीएमआईडी 29317916 .

83. ^ शेली, एलआई (1981)। अपराध और आधुनिकीकरण: औद्योगीकरण और शहरीकरण का अपराध पर प्रभाव। कार्बोंडेल: सदर्न इलिनोइस यूनिवर्सिटी प्रेस।

84. ^ गमस, ई। (2004)। शहरी क्षेत्रों में अपराध: एक अनुभवजन्य जांच।

85. ^ ब्रिंस्मा, जीजे (2007)। शहरीकरण और शहरी अपराध: डच भौगोलिक और पर्यावरण अनुसंधान। क्राइम एंड जस्टिस, 35(1), 453-502।

86. ^ मलिक, एए (2016)। शहरीकरण और अपराध: एक संबंधपरक विश्लेषण। जे मानव। और समाज। एससी., 21, 68-69।
87. ^ उमस्टैट मेयर, एम. रेनी ; मूर, जस्टिन बी.; एबिल्ड्सो, क्रिस्टियान; एडवर्ड्स, माइकल बी.; गैंबल, अबीगैल; बास्किन, मोनिका एल. (2016)। "ग्रामीण सक्रिय जीवन" । जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ मैनेजमेंट एंड प्रैक्टिस । 22 (5): ई11-ई20। डीओई : 10.1097/phh.0000000000000333 । पीएमसी 4775461 । पीएमआईडी 26327514 ।
88. ^ बेफ़ोर्ट, क्रिस्टी ए।; नजीर, नियामन; पेरी, माइकल जी। (1 सितंबर 2012)। "संयुक्त राज्य अमेरिका के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के वयस्कों में मोटापे की व्यापकता: NHANES से निष्कर्ष (2005-2008)" । द जर्नल ऑफ रूरल हेल्थ । 28 (4): 392-397। डीओआई : 10.1111/जे.1748-0361.2012.00411 .x । आईएसएसएन 1748-0361 । पीएमसी 3481194 । पीएमआईडी 23083085 ।
89. रीस, जारेड पी.; बाउल्स, हीदर आर.; आइंसवर्थ, बारबरा ई.; डुबोस, कैटरीना डी.; स्मिथ, शेरोन; लडित्का, जेम्स एन. (1 दिसम्बर 2004)। "शहरीकरण और अमेरिकी भौगोलिक क्षेत्र की डिग्री द्वारा गैर-व्यावसायिक शारीरिक गतिविधि"। खेल और व्यायाम में चिकित्सा और विज्ञान । 36 (12): 2093-2098। डीओआई : 10.1249/01.एमएसएस.0000147589.98744.85 । आईएसएसएन 0195-9131 । पीएमआईडी 15570145 ।
90. ^ सेगुइन, रेबेका; कॉनर, लिआ; नेल्सन, मरियम; लाक्रॉइक्स, एंड्रिया; एल्ड्रिज, गैलेन (2014)। "ग्रामीण समुदायों में स्वस्थ भोजन और सक्रिय रहने के लिए बाधाओं और सहायकों को समझना" । जर्नल ऑफ न्यूट्रिशन एंड मेटाबॉलिज्म । 2014 : 146502. डीओआई : 10.1155/2014/146502 । आईएसएसएन 2090-0724 । पीएमसी 4276670 । पीएमआईडी 25574386 ।
91. ↑ सल्लिस, जेम्स एफ.; फ्लोयड, मायरोन एफ.; रोड्रिग्ज, डेनियल ए.; सैलेंस, ब्रायन ई। (7 फरवरी 2012)। "शारीरिक गतिविधि, मोटापा और हृदय रोग में निर्मित वातावरण की भूमिका" । परिसंचरण । 125 (5): 729–737। डीओआई : 10.1161/परिसंचरणआहा.110.969022 । आईएसएसएन 0009-7322 । पीएमसी 3315587 । पीएमआईडी 22311885 ।
92. ^ लुसियानो (2016)। "कथित असुरक्षा, मानसिक स्वास्थ्य और शहरीकरण: एक बहुकेंद्रित अध्ययन से परिणाम"। सामाजिक मनश्चिकित्सा का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल । 62 (6): 252–61। डीओआई : 10.1177/0020764016629694 । पीएमआईडी 26896027 । एस2सीआईडी 37122169 .
93. ^ बेरी, हेलेन (6 दिसंबर 2007)। "'भीड़ वाले उपनगर' और 'हत्यारे शहर': शहरी वातावरण और मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंधों की संक्षिप्त समीक्षा"। एनएसडब्ल्यू पब्लिक हेल्थ बुलेटिन । 18 (12): 222–7। डीओआई : 10.1071 / एनबी07024 । पीएमआईडी 18093463 ।
94. ^ श्रीवास्तव, कल्पना (जुलाई 2009)। "शहरीकरण और मानसिक स्वास्थ्य" । औद्योगिक मनोरोग जर्नल । 18 (2): 75-6। डीओई : 10.4103/0972-6748.64028 . पीएमसी 2996208 । पीएमआईडी 21180479 ।
95. ^ डेविस, किंग्सले; हर्ट्ज गोल्डन, हिल्डा (1954)। "शहरीकरण और पूर्व-औद्योगिक क्षेत्रों का विकास"। आर्थिक विकास और सांस्कृतिक परिवर्तन । 3 (1): 6–26। डीओआई : 10.1086/449673 . एस2सीआईडी 155010637 .
96. ^ "शहरी श्रम बाजारों में अवसर और शोषण" (पीडीएफ) । विदेशी विकास संस्थान। नवंबर 2008. मूल (पीडीएफ) से 27 मार्च 2009 को पुरालेखित । 12 जनवरी 2009 को पुनःप्राप्त ।
97. ^ श्रीधर, केएस (2007)। "घनत्व प्रवणता और उनके निर्धारक: भारत से साक्ष्य"। क्षेत्रीय विज्ञान और शहरी अर्थशास्त्र । 37 (3): 314–44। डीओआई : 10.1016/j.regsciurbeco.2006.11.001 ।
98. ^ बोरा, मधुस्मिता (1 जुलाई 2012)। "अमेरिकी आवास की मांग में बदलाव से अमेरिका के फिर से शहरीकरण की संभावना होगी" । nwitimes.com. 26 सितंबर 2017 को मूल से संग्रहीत । 20 मार्च 2013 को पुनःप्राप्त ।
99. ↑ वार्ष्णेय, ए. (सं.) 1993. "बियॉन्ड अर्बन बायस", पी। 5. लंदन: फ्रैंक कैस।
100. ^ लवासा, सेटो, शाएब, करेन (27 नवंबर 2020)। "अध्याय 8 शहरी प्रणालियाँ और अन्य बस्तियाँ" (पीडीएफ) । 4 अप्रैल 2019 को मूल से संग्रहीत (पीडीएफ) । 4 अप्रैल 2019 को पुनःप्राप्त ।
101. ↑ क्रिस्टोफर बी. लीनबर्गर; पैट्रिक लिंच (2014)। फ़ुट ट्रैफ़िक अहेड : रैंकिंग वॉकेबल अर्बनिज़्म इन अमेरिकाज़ लार्जेस्ट मेट्रोज़ (पीडीएफ) (रिपोर्ट)। जॉर्ज वाशिंगटन यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ बिजनेस। 24 सितंबर 2015 को मूल (पीडीएफ) से संग्रहीत । 11 जुलाई 2015 को पुनःप्राप्त ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 9, Issue 1, January 2022 |

102. ^ लवलेस, एच (1965)। "शहरी विस्तार का नियंत्रण: लिंकन, नेब्रास्का अनुभव"। अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ प्लानर्स का जर्नल । 31:4 (4): 348–52. डीओआई : 10.1080/01944366508978191 .

103. ^ "यूएन: 1950 से 2020 तक दुनिया की शहरी आबादी कैसे बदल गई है?" . विश्व आर्थिक मंच । मूल से 31 अक्टूबर 2019 को पुरालेखित । 31 अक्टूबर 2019 को पुनःप्राप्त ।